जापान के मत्स्य उद्योग का वर्णन करें।
(Discuss the Fishery industry of Japan)

जापान आज विश्व का 8वाँ बड़ा मत्स्य उत्पादक देश है। सन् 1984 के बाद यहाँ इस उद्योग में मंदी आने लगी। आज विश्व मत्स्य उत्पादन का 4 % तथा प्रतिवर्ष 4389,000 टन उत्पादन करता है। वर्तमान समय में जापान के लगभग 18% जनसंख्या इस उद्योग पर आश्रित है तथा जापानी लोगों का मुख्य भोजन मत्स्य ही है। आज भी जापान विश्व की सबसे अधिक प्रति व्यक्ति मछली की खपत करता है। जापान में प्रति व्यक्ति मछली की खपत वर्ष 53.7 कि०ग्राम (2013) है। यहाँ अधिकांश मछलियाँ समुद्र से निकाली जाती है। जापान में मत्स्य उद्योग के विकसित होने के निम्नलिखित कारण है —

1). यहाँ कृषि योग्य भूमि की कमी है। इसलिए यहाँ की बढ़ती जनसंख्या को भी विकोपार्जन के लिए समुद्र की ओर अग्रसर होना पड़ा।

2) यहाँ पर उत्पन्न मछलियों का संसार में सबसे अधिक मांग है।

3) जापान में प्रौद्योगिकी विकास के कारण इस उद्योग के विकास में बड़ी सहायता मिली। आधुनिक यंत्रों, नवीन आविष्कारों में विकसित ट्रेलरों के उपयोग से मत्स्य उत्पादन में वृद्धि हुई।

4) जापान के उत्तरी भाग में बड़े पैमाने पर मछलियाँ पकड़ी जाती है, परंतु वहाँ कृषि योग्य भूमियों का अभाव है।

5) जापानी लोगों का मुख्य भोजन मछली और चावल है। यहाँ की 80% जनसंख्या अपने भोजन में मछली का प्रयोग करती है।

6) जापान का तटीय किनारा अत्यधिक कटा-फटा है। इस लिये यहाँ तटों पर अनेक (मत्स्य) मछली पकड़ने के केन्द्र बना दिये गये हैं।

7. जापान के तटों पर गर्म एवं ठण्डी जलधाराएँ ... हैं। यहाँ के मिलन स्थल पर प्लैंकटन की अधिक(ता) ... के कारण। बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ी जाती ...

8. जापानी अवस्थिति भी मत्स्य उद्योग को विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई है। सामुद्रिक स्थिति ... कारण। यहाँ प्राचीन काल से ही इस उद्योग को फलने एवं फूलने का अवसर मिला है।

9. जापानी जलवायु भी इस उद्योग के विकास में सहायक है। शीतोष्ण जलवायु के कारण यहाँ की पकड़ी मछलियाँ जल्दी खराब नहीं होती है।

10. जापान में ट्रालरों एवं डिफ्टरों में प्रशीतलन गृह (Refrigerate Alone) तथा वातानुकूलित (Air conditioned) मशीनें लगायी गयी हैं। जिससे इस उद्योग को बढ़ावा मिला है।

11. जापानी मछलियों की मांग अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अधिक होने के कारण। इस उद्योग को बढ़ावा मिला है।

मत्स्य भंडार (Fish mass)

जापान में मुख्य तीन प्रकार की जल राशियाँ पायी जाती हैं। इन्हीं जल राशियों में शामिल मछलियाँ पकड़ी जाती है —

1) ठंडा जल भण्डार — होकैडो द्वीप और उत्तरी जापान सागर में है। ठंडी जल राशि में पकड़े जाने वाली मछलियों का भंडार अवस्थित है।

2) गर्म जल भण्डार — जापान में गर्म जल ~~भंडार~~ की राशि में पकड़ी जाने वाली मछलियों का भंडार मध्य और दक्षिणी होन्शू तथा शिकाकू के आस-पास सागरीय भाग में स्थित है।

3). मिश्रित जल भण्डार - उत्तरी होन्शू द्वीप के पास जहाँ गर्म एवं ठंडी जल धाराएँ मिलती हैं, यहाँ ही मिश्रित जल भण्डार वाली मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

जापान के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र —

वैसे तो जापान के सभी तटीय भागों में मछलियाँ पकड़ी जाती है लेकिन उत्पादन के दृष्टिकोण से यहाँ मुख्य रूप से तीन प्रमुख मत्स्य उत्पादक क्षेत्र हैं —

1) होकैडो क्षेत्र — यह जापान का प्राचीन मत्स्य उत्पाक केन्द्र है। यहाँ की एनू जाति मछली पकड़ने में बहुत ही कुशल थी। यहाँ से जापान का लगभग 40% मछलि पकड़ी जाती है। वकाना, अबाशिरि, सपोरो, ओटारू और हैकोडेट मुख्य मत्स्य उत्पादक केन्द्र है। कटे-फटे तट, कृषि योग्य भूमि की कमी, तथा अनुकूल जलवायु के कारण यहाँ मत्स्य उदयोग का काफी विकास हुआ है।

2) उत्तर-पूर्वी हॉन्शू क्षेत्र — हॉन्शू द्वीप के उत्तरी-पूर्वी तटीय भाग जापान दूसरा प्रमुख मत्स्य उत्पादक क्षेत्र है। यहाँ जापान का 28% मछली पकड़ी जाती है। कटे-फटे तट, स्थानीय मांग, सघन आबादी एवं औदयोगिक विकास के कारण यहाँ मत्स्य उदयोग के फलने एवं फूलने का मौका मिला है। हेचीनोही, अकीता, ओमोरी, सेंडाई, कैमेशी मियाको, निगाता, दना, शिओगामा तथा ईशीनोमाकी मुख्य मत्स्य/मछली पकड़ने के केन्द्र है।

3. क्यूशू, शिकोकू तथा दक्षिणी हॉन्शू क्षेत्र —

यह जापान दूसरा बड़ा मत्स्य उत्पादक क्षेत्र है। यहाँ जापान के कुल मत्स्य उत्पादन का 32% भाग उत्पन्न होता है। सुरक्षित तट, उथले एवं स्थिर समुद्र होने के कारण यहाँ असंख्य मछलियाँ अण्डे देने तटों पर आती है। ओवारे, टोवातु, फुकोका, नागासाकी टकामात्सू और शिमोनोस्की मुख्य मत्स्य उत्पादक केन्द्र है।

जापान में मत्स्य उद्योग के साथ अन्य पूरक उद्योग
जैसे- मोम (व्हेल की चर्बी), खाद (मछलियों के अवशेष)
तथा पशु के चारे (मछलियों के कांटे) आदि। जापानी
मछुआरे व्हेलों के शिकार के लिये बेरिंग सागर
ओखोटस्क सागर तक चले जाते हैं। आज जापान व्हेल
मछलियों का तेल निकालकर विश्व में निर्यात
करता है। इसके अलावा कृत्रिम मोती का भी बड़े पैमाने
पर उत्पादन करता है।

हाल के वर्षों में चीन, वियतनाम, इंडोनेशि
आदि देशों के मछुआरों से कड़ी टक्कर मिल रही
विश्व में EEZ (ई० ई० जेड) के निर्धारण बड़े पैमाने पर
मछलियों के उत्पादन के कारण तटों के समीप इनके वि
वैश्विक और सागरों के जलीय जीवों के अंतर्राष्ट्रीय
समझौते के तहत कोटा प्रणाली के अंतर्गत दोहन से
सन 1990 के बाद जापान में मछलियों के उत्पादन
तेजी से ह्रास हुआ है। यदि जापानी सरकार समय
ऐसे मत्स्य उत्पादन को रोक नहीं सकी तो भविष्य
मत्स्य व्यवसाय पर विराम लग जायगा।

—x—x—